EXECUTIVE SUMMARY OF THE MINOR RESEARCH PROJECT

1550-MRP/14-15/KLCA009/UGC-SWRO, DATED : 04.02.2015

दलित जीवन का चितेरा : ओमप्रकाश वाल्मीकि

दलित साहित्य दलितों की पीडा, उत्पीडन, शोषण, इन सबके विरुद्ध उनके आक्रोश तथा परिवर्तन के संकल्प का साहित्य है जो जातिविहीन समाज का सपना पालता है। यह बहिष्कृत समाज को मुख्य समाज के समकक्ष लाने का प्रयास करता है। इसमें सहानुभूति की नहीं, सह–जीवन की कामना है। दलितों द्वारा लिखे जाने पर ही इसमें अनुभूति की सच्चाई आ जाएगी। इसलिए दलितों द्वारा लिखित साहित्य को ही आजकल दलित साहित्य माना जाता है। दलित साहित्य बाबा साहब अंबेडकर की विचारधारा को अपना मूल स्रोत मानता है। महात्मा बुद्ध और ज्योबिता फुले के विचारों से भी दलित साहित्य प्रभावित है।

आज दलित शब्द का प्रयोग उन शोषित, पीडित जन–समुदायों के लिए होता है, जिनका युगों से आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक शोषण हो रहा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के शब्दों में – ''दलित शब्द उस व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है जो समाज–व्यवस्था के तहत सबसे निचली पायदान पर है। वर्ण–व्यवस्था ने जिसे अछूत या अत्यंज की श्रेणी में रखा। उसका दलन हुआ, शोषण हुआ। इस समूह को ही संविधान में अनुसूचित जातियाँ कहा गया है, जो जन्मना अछूत है।''[1]

---

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि : दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. 14

भारतीय साहित्य में वैदिक काल से लेकर दलितों की भागीदारी है। वैदिक काल के ऐतरेय, कवष, सत्यकाम, अंगीरस आदि ऋषि शूद्र या दलित जाति के माने जाते हैं। व्यास मछुआरे के बेटे थे और आदिकवि वाल्मीकि भील जाति के थे। अपभ्रंश काल में सिद्ध, जैन, नाथ साहित्य में भी दलितों की अभिव्यक्ति मिलती है। चौरासी सिद्धों में चमार, धोबी, लोहार, मछुआ आदि का उल्लेख मिलता है। सिद्ध साहित्य में सबसे पहले वर्ण, जाति तथा धार्मिक आडंबर का विरोध मिलता है। भक्तिकालीन निर्गुण संत कवि जाति–पाँति, छुआछूत, धार्मिक आडंबर, अंधविश्वास, अनाचार, सामाजिक भेद–भाव आदि के विरोधी थे। उनकी वाणी में दलित चेतना मुखरित है।

आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य की शुरुआत आठवें दशक में हुई है। आज दलित साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, निबंध, नाटक आदि विभिन्न विधाओं के माध्यम से दलित चेतना प्रस्फुटित होती है। दलित रचनाकार अपनी रचना में अपने जीवन के खुरदरे यथार्थ तथा दर्द की अभिव्यक्ति करता है, साथ ही इसमें बुरी सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ उनका आक्रोश तथा जातिविहीन, समता पर आधारित आदर्श समाज की स्थापना की कामना भी है। दलित रचनाकार मुख्यधारा साहित्य को हिन्दू वर्ण–व्यवस्था, सामंतवाद, ब्राह्मणवाद आदि की उपज मानता है, जिसने दलितों की समस्याओं को नज़रंदाज़ किया है। कहीं–कहीं दलितों के प्रति उसमें सहानुभूति या करुणा प्रकट की गयी है, किंतु उन्हें दल–दल से बचाने का प्रयास उसमें नहीं है। इसलिए दलित लेखकों ने अलग खडा होकर अपनी राह तलाशने का

प्रयास किया है, दलित साहित्य जिसका परिणाम है। दलित अपने साहित्य को समाज में बदलाव लाने के लिए औजार के रूप में इस्तेमाल करता है। दलित साहित्य से दलित समाज यह समझने लगा कि अपने दुख, दर्द, तनाव, संघर्ष आदि छिपाने की चीज़ें नहीं हैं बल्कि रूढिग्रस्त समाज के खिलाफ हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की चीज़ें हैं। जब वे अपने खुरदरे यथार्थों के साथ समाज के सामने आकर आक्रोश करने लगे तब रूढिग्रस्त परंपरा की दीवार हिलकर धीरे–धीरे दुर्बल होने लगी है।

आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य को नयी दिशा, दशा और ऊर्जा प्रदान करनेवाले महान रचनाकार हैं ओमप्रकाश वाल्मीकि। उन्होंने अंधेरी दलित पगडंडियों में क्रांति की मशाल जलाकर नयी चेतना की रोशनी फैला दी है। उन्हें हिन्दी दलित साहित्य का आधारस्तंभ कहना अनुचित नहीं होगा। दलित माहौल में रूपायित ओमप्रकाश वाल्मीकि जी का रचनात्मक व्यक्तित्व अन्य पारंपरिक रचनाकारों के समान नहीं था। जातिविहीन, वर्ण रहित, समत्व पर आधारित आदर्श समाज की स्थापना उनके साहित्य का ध्येय है। आज जनता की बोलचाल की भाषा और सरल शैली में दलित समाज के खुरदरे यथार्थ का चित्रण कर उन्होंने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में क्रांति मचा दी है। जयप्रकाश कर्दम जी ने बिल्कुल सही कहा है – ''सच कहिए तो वह हिन्दी दलित साहित्य का पर्याय हैं। हिन्दी दलित साहित्य में यदि किसी लेखक को लीजेंड कहा या माना जा सकता है तो निर्विवाद रूप से वह ओमप्रकाश वाल्मीकि हैं।''[2]

---

2. सं. जयप्रकाश कर्दम : ओमप्रकाश वाल्मीकि : व्यक्ति, विचारक और सृजक, पृ.9

वाल्मीकि जी की प्रमुख रचनाएँ हैं – जूठन (आत्मकथा), सदियों का संताप, बस्स! बहुत हो चुका, अब और नहीं, शब्द झूठ नहीं बोलते (कविता संग्रह), सलाम, घुसपैठिए, छतरी (कहानी संग्रह), दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, मुख्यधारा और दलित साहित्य, दलित साहित्य : अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ (आलोचना), सफाई देवता (सामाजिक अध्ययन) आदि। वे अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार, परिवेश सम्मान, जयश्री सम्मान, कथाक्रम सम्मान, न्यू इंडिया बुक पुरस्कार, साहित्य भूषण सम्मान आदि से पुरस्कृत रचनाकार हैं। नवंबर 2013 को 63 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया था।

दलित समाज भारतीय जाति–व्यवस्था को ही अपनी समस्याओं का मूल कारण समझते हैं। जाति के नाम पर सवर्ण समाज उनका दमन, शोषण तथा उपेक्षा करते हैं, उनसे अमानवीय व्यवहार करते हैं। यह उनके जीवन को दूभर बनाता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से दलित जीवन की सही प्रतिलिपि प्रस्तुत की है। उनमें दलितों के भोगे हुए यथार्थ का चित्रण है, जाति, धर्म, संस्कृति और ईश्वर की आड में सहस्राब्धियों से रचनेवाली साजिश की पोल खुलती है। दलितों के साथ होनेवाले अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आक्रोश है, सत्ता और राजनीति पर व्यंग्य है तथा जातिविहीन, समानता–युक्त समाज की स्थापना की कामना है। बोलचाल की सरल, सहज और स्वाभाविक भाषा में, चिरपरिचित प्रतीकों और बिंबों के सहारे तथा पौराणिक मिथकों के नये अर्थ और संदर्भ में प्रयोग करके उन्होंने अपने भावों और विचारों को अधिक संप्रेषणीय बनाया है। वास्तव में वाल्मीकि ने अपनी कविताओं के

माध्यम से सामाजिक शोषण के खिलाफ खडे होकर दलित अस्मिता की खोज की है, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा की है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानियों में जीवित मनुष्य की यातनाओं का चित्रण किया है। वे दलित–बोध के सशक्त रचनाकार थे। दलित समाज का सच्चा चित्रण उनकी कहानियों में हुआ है। अपनी कहानियों के संबन्ध में 'छतरी' की भूमिका में वे स्वयं लिखते हैं – ''दलित जीवन की विसंगतियों, विषमताओं, अनुभवों, संघर्षों, सरोकारों और उनकी जिजीविषा को उकेरती ये कहानियाँ भारतीय जीवन की सामाजिक व्यवस्था के भीतर छिपी अमानवीयता को भी उघाडने की कोशिश करती है।''[3] उनकी कहानियों में अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति हुई है। उनके ही शब्दों में – ''सच तो यह है कि मैंने जैसा जीवन देखा–भोगा, महसूस किया, वैसा ही लिखने की, दिखाने की कोशिश की।''[4] इसके लिए उन्होंने अपने समाज की भाषा का ही सहारा लिया है।

वाल्मीकि जी के तीन कहानी संकलनों में अडतीस कहानियाँ संकलित हैं। उनकी अधिकांश कहानियों के केन्द्र में जाति–समस्या ही है। भारतीय जाति–व्यवस्था अत्यंत संकीर्ण है और यह समाज में अनेक प्रकार के अमानवीय तत्वों को जन्म देती है। वाल्मीकि जातिवादी ताकतों की करतूतों के भुक्तभोगी थे। इसलिए उनकी कहानियों में जातिवादी सवर्णों के अमानवीय व्यवहार, इससे बचने के लिए अपनी जाति को छिपाकर शहरों में रहनेवाले दलितों के

---

3. ओमप्रकाश वाल्मीकि : छतरी (भूमिका), पृ. 9
4. ओमप्रकाश वाल्मीकि : घुसपैठिये (भूमिका), पृ. vii

अंतर्द्वंद्व और विवशता, दलित अस्मिता की खोज, दलितों की पीडा और गरीबी का हृदयविदारक चित्रण, कार्यालयों में होनेवाली दलित उपेक्षा का जिक्र, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आक्रोश, दलितों का जातिगत अंतर्विरोध, बाबा अंबेडकर के प्रति अडिग आस्था, अंधविश्वास, अनाचार, धर्मान्धता आदि पर प्रहार, आरक्षण खत्म होने की आशंका, अपने हक के लिए लडने का आह्वान, जाति–धर्म भेदभाव को छोडकर समाज में समानता की प्रतिष्ठा की कामना आदि सबकुछ हैं। वाल्मीकि जी सही अर्थ में दलित जीवन का चितेरा है और उनकी कहानियाँ इसके सबूत हैं।

दलित साहित्य में आत्मकथा का विशेष महत्व है। आत्मकथा को दलित साहित्य की पहचान मानी जाती है। दलित आत्मकथा लेखक की अपनी जीवन–कथा मात्र नहीं होती, अपितु अपने समाज की भी आत्मकथा होती है। दलित लेखक अपनी आत्मकथा में जीवन की सच्चाई को, अनुभूत सत्य को उसकी संपूर्ण विद्रूपता के साथ प्रस्तुत करता है। दलित अस्मिता की खोज ही दलित आत्मकथा लेखन की मुख्य प्रेरणा होती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की आत्मकथा 'जूठन' हिन्दी की बहुचर्चित रचना है। यह दो खंडों में प्रकाशित है। पहला खंड सन् 1997 में तथा दूसरा खंड उनकी मृत्यु के बाद सन् 2015 में प्रकाशित हुआ। 'जूठन' में अनुभूत सत्य की असली अभिव्यक्ति हुई है। यह वाल्मीकि जी की आत्मकथा मात्र न होकर भारतीय दलित समाज के दर्द की दस्तावेज है। इसमें लेखक ने गाँव का माहौल, गरीबी की गहनता, शिक्षाकाल की समस्याएँ, दलितों के बीच प्रचलित

अंधविश्वास, अनाचार, समाज में प्रचलित जातिगत भेदभाव, सवर्णों द्वारा दलितों के साथ किये जानेवाले अमानवीय व्यवहार तथा शोषण, दलित होने के कारण कार्यालय में सहकर्मि तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की उपेक्षा तथा अपमान, किराये पर घर मिलने की दिक्कत आदि अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। ये लेखक की मात्र समस्याएँ न होकर हरेक दलित की समस्याएँ हैं। 'जूठन' यह भी दिखाती है कि इन समस्याओं का सामना करके कैसे आगे बढ़ना है। यह सहन की व्यथाकथा न होकर संघर्ष की संकल्पकथा है। यह दबे–कुचले दलित समुदाय में आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता को जगाने का प्रयास करती है। समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, शोषण, अन्याय, अत्याचार आदि को मिटाना तथा दलित समुदाय में व्याप्त कुंठा, निराशा, हीनताबोध आदि को दूर करना 'जूठन' का लक्ष्य है। 'जूठन' सिखाती है कि समाज की अमानवीय व्यवस्था को तोडकर मनुष्यता की स्थापना के लिए खुद हमें संघर्षरत होना चाहिए, ईश्वर या भाग्य के भरोसे बैठे रहकर कुछ हासिल होनेवाला नहीं है। 'जूठन' ने हिन्दी आत्मकथा साहित्य को नया चेहरा प्रदान किया है। जयप्रकाश कर्दम के शब्दों में – ''हिन्दी साहित्य में अनेक आत्मकथाएँ लिखी गयी हैं, किंतु अपनी विशेषताओं के कारण यह हिन्दी में लिखी गयी समस्त आत्मकथाओं में सबसे अलग और उच्च स्थान रखती है। यह कहना शायद अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि आत्मकथा साहित्य में 'जूठन' एक मील का पत्थर है। अमानवीय और जड समाज की चेतना को जिस वेग और तीव्रता के साथ इसने झकझोरा है, यह किसी बडी उपलब्धि से कम नहीं है। जिस प्रकार का अभावग्रस्त, घृणित, तिरस्कारपूर्ण, अपमानजनक और नारकीय जीवन ओमप्रकाश वाल्मीकि ने जिया

तथा जिस प्रकार वहाँ से निकलकर समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया, वह अनुकरणीय है तथा बहुतों की प्रेरणा का आधार हो सकता है। .... संक्षेप में कहा जा सकता है कि 'जूठन' सामाजिक बदलाव की पटकथा है।''[5] 'जूठन' को युगांतरकारी रचना कहना कभी असंगत नहीं होगा।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने अपनी कविता, कहानी और आत्मकथा के माध्यम से हिन्दी दलित साहित्य को समृद्ध किया है, साथ ही एक दलित विचारक और आलोचक के रूप में अपने अलग दृष्टिकोण से हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में हलचल मचा दी है। उनके साहित्य संबंधी विचारों का परिचय 'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' तथा 'मुख्यधारा और दलित साहित्य' – इन दो किताबों से हमें मुख्यतः प्राप्त होता है। 'सफाई देवता' में उन्होंने भंगी समाज का सामाजिक और ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

'दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' किताब में वाल्मीकि जी ने दलित कौन है, दलित रचनाकार कौन हो सकता है, दलित साहित्य के भावपक्ष और कलापक्ष की विशेषताएँ क्या–क्या हैं, दलित साहित्य का मूल्यांकन कैसे करना है आदि विषयों पर अपने विचार प्रकट किए हैं। उनका मत है कि पारंपरिक हिन्दी समीक्षा पद्धति से पारंपरिक हिन्दी साहित्य का मात्र मूल्यांकन संभव होगा। दलित साहित्य, जो दलित जीवन के खुरदरे यथार्थ को प्रस्तुत करनेवाला है, के मूल्यांकन के लिए एक अलग समीक्षा पद्धति की ज़रूरत पर वे ज़ोर देते हैं। यह आलोचना पद्धति भारतीय समाज–व्यवस्था, जाति व्यवस्था,

---

5. जयप्रकाश कर्दम : दलित साहित्य : सामाजिक बदलाव की पटकथा, पृ. 125

अर्थ–व्यवस्था और संस्कृति के गहन अध्ययन के बाद उनमें निहित अमानवीय मूल्यों का निषेध कर समाज में समता, स्वतंत्रता, बन्धुता जैसे मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के उद्देश्य से रूपाति है, जिसके माध्यम से ही दलित साहित्य का सही मूल्यांकन संभव होगा।

'मुख्यधारा और दलित साहित्य' रचना में लेखक ने साहित्यिक और सामाजिक विषयों पर अपने विचार प्रकट किये हैं। भारतीय जाति–व्यवस्था के फलस्वरूप दलितों को जो उत्पीडन सहना पड रहा है, तथा धर्म और राजनीति के अनैतिक संबंध से समाज में जो अव्यवस्था और सांप्रदायिकता पनप रही है, इन सबका उल्लेख इस किताब में हुआ है। मुख्यधारा साहित्य ने दलितों की असली समस्याओं को अनदेखा किया है, इसलिए दलितों ने अपनी समस्याओं और जीवन–संघर्षों को प्रस्तुत करते हुए दलित साहित्य की शुरुआत की है, जिसमें प्रतिपादित विषय और जिसकी भाषा मुख्यधारा रचनाकारों के लिए बिल्कुल अपरिचित एवं नये हैं। दलितों के खुरदरे जीवन यथार्थों से गुज़रनेवाला यह साहित्य सामाजिक बदलाव का प्रयत्न करता है, समाज में समता की स्थापना पर ज़ोर देता है।

'सफाई देवता' वाल्मीकि जी के सामाजिक अध्ययन की उपज है। भारत के विभिन्न प्रांतों में सफाई कार्य करनेवाले समुदायों का विवरण इस किताब में है। वे भारतीय हिन्दू जाति–व्यवस्था को एक दार्शनिक साजिश समझते हैं, जिसकी वजह से दलितों का जीवन शोचनीय एवं दूभर हो गया है। दलितों के साथ हज़ारों साल से किए जानेवाले अमानवीय व्यवहार का विरोध तथा जाति रहित, समत्व पर आधारित समाज की स्थापना का आह्वान इस किताब में है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से दलित जीवन का सच्चा चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं ने दलित जीवन में चेतना की नयी रोशनी फैला दी है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में दलित अस्मिता की खोज करने का प्रथम प्रयास वाल्मीकि जी न किया है। उन्होंने दलित साहित्य को नयी दिशा प्रदान की है। जयप्रकाश कर्दम के शब्दों में – ''संक्षेप में कहा जाय तो ओमप्रकाश वाल्मीकि हिन्दी दलित साहित्य के आधारस्तंभ थे। उनके लेखन से हिन्दी दलित साहित्य को एक आधार और सशक्त पहचान मिली। सच कहिये तो वह हिन्दी दलित साहित्य का पर्याय थे। हिन्दी दलित साहित्य में यदि किसी लेखक को लीजेंड कहा या माना जा सकता है तो निर्विवाद रूप से वह ओमप्रकाश वाल्मीकि हैं।''[6] उन्होंने दलित समाज को समझाया कि अपने दुख, दर्द, समस्याएँ आदि छिपाने की चीज़ें नहीं हैं, बल्कि हथियार के समान इस्तेमाल करने की चीज़ें हैं। उन्होंने दलितों के मन से हीनता–बोध को हटाकर अपने अधिकार के लिए लडने की प्रेरणा दी है। उन्हें 'दलित जीवन का चितेरा' कहना कभी असंगत नहीं होगा।

डॉ. जयरामन पी.एन

एसोसियेट प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग,

सरकारी विक्टोरिया कॉलेज,

पालक्काड–678 001.

---

6. सं. जयप्रकाश कर्दम : ओमप्रकाश वाल्मीकि : व्यक्ति, विचारक और सृजक, पृ. 9